vinetur

Pernod Ricard भारत के कारोबार की IPO पर कर रही विचार

फ्रांसीसी स्पिरिट्स समूह के मुताबिक भारत अमेरिका को पीछे छोड़कर उसका सबसे बड़ा बाजार बन सकता है, इसलिए सूचीबद्धता रणनीतिक विकल्प है

सोमवार, 23 नवंबर 2026



Pernod Ricard अपने भारत के कारोबार के संभावित प्रारंभिक सार्वजनिक निर्गम (IPO) की तैयारी कर रही है। फ्रांसीसी स्पिरिट्स समूह का कहना है कि भारत उसकी वैश्विक वृद्धि के लिए लगातार अहम होता जा रहा है और वह इस कदम पर विशुद्ध वित्तीय कारणों के बजाय रणनीतिक वजहों से विचार कर रहा है।

The Economic Times की रिपोर्ट के मुताबिक, चेयरमैन Alexandre Ricard ने 20 नवंबर को कंपनी की वार्षिक आम बैठक में शेयरधारकों से कहा कि बोर्ड इस विकल्प पर चर्चा के लिए जनवरी 2027 में भारत में बैठक कर सकता है। उन्होंने कहा कि अभी कोई अंतिम फैसला नहीं हुआ है और आगाह किया कि सूचीबद्ध होने से नौकरशाही और नियामकीय

जटिलताएं बढ़ेंगी तथा मूल कंपनी की हिस्सेदारी स्थायी रूप से घट जाएगी।

Ricard ने भारत को Pernod Ricard के लिए "बेहद रणनीतिक" बताया और कहा कि मध्यम अवधि के अनुमानों के अनुसार, राजस्व के लिहाज से यह देश आगे चलकर समूह का सबसे बड़ा एकल बाजार बन सकता है और अमेरिका को पीछे छोड़ सकता है। उन्होंने कहा कि भारत पहले से ही अमेरिका के बाद Pernod Ricard का दूसरा सबसे बड़ा बाजार है। एक दशक पहले यह कंपनी के शीर्ष 12 बाजारों में भी शामिल नहीं था।

Chivas Regal, Royal Stag और The Glenlivet की मालिक कंपनी ने किसी संभावित निर्गम के आकार या समय का खुलासा नहीं किया है। शेयरधारकों की बैठक में एक निवेशक ने 1 अरब डॉलर से अधिक मूल्य के IPO का विचार रखा, लेकिन Ricard ने किसी मूल्यांकन की पुष्टि नहीं की। उन्होंने कहा कि करीब एक साल पहले बोर्ड ने उनसे सूचीबद्ध होने के रणनीतिक औचित्य की पड़ताल करने को कहा था और कंपनी अब तैयारी के काम के जरिए इस विकल्प को खुला रख रही है।

भारत के सूचीबद्धता नियमों के तहत, Pernod Ricard को अपनी हिस्सेदारी घटाकर करीब 75% करनी होगी, क्योंकि कम से कम 25% शेयर सार्वजनिक निवेशकों के पास होना जरूरी है। Ricard ने कहा कि ऐसा कदम अपरिवर्तनीय होगा और कंपनी को उस कारोबार का पूर्ण स्वामित्व छोड़ना पड़ेगा, जिसे वह लगातार अधिक महत्वपूर्ण मान रही है। उन्होंने कहा कि किसी भी सौदे को मंजूरी देने से पहले बोर्ड को रणनीतिक लाभों और अनुकूल बाजार परिस्थितियों, दोनों पर भरोसा होना चाहिए।

Ricard ने कहा कि भारत की इकाई के सूचीबद्ध होने से सुशासन और पारदर्शिता बेहतर हो सकती है तथा नियामकों, ग्राहकों, आपूर्तिकर्ताओं और अन्य स्थानीय हितधारकों के साथ संबंध मजबूत हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि शेयर बाजार में सूचीबद्धता से ऐसे बाजार में प्रतिभाओं को आकर्षित करने में मदद मिल सकती है, जहां कुशल कर्मचारियों के लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। हालांकि, उन्होंने यह भी जोर दिया कि इसके बदले कंपनी की कामकाज में फुर्ती घटेगी और प्रशासनिक बोझ बढ़ेगा।

यह चर्चा वैश्विक पेय उद्योग में आए व्यापक बदलाव को दर्शाती है, जहां बहुराष्ट्रीय शराब कंपनियों के लिए भारत का महत्व बढ़ रहा है। स्पिरिट्स उत्पादकों के लिए देश की वृद्धि दीर्घकालिक निवेश योजनाओं को नया आकार दे रही है। किसी बड़ी स्थानीय सहायक कंपनी की सार्वजनिक सूचीबद्धता यह संकेत दे सकती है कि बिक्री के स्रोत और रणनीतिक आधार, दोनों रूपों में भारत कितना अहम हो गया है।

Ricard ने भारत, चीन और अफ्रीका के कुछ हिस्सों समेत उभरते बाजारों में बढ़ते आर्थिक राष्ट्रवाद और स्थानीय उत्पादों के प्रति उपभोक्ताओं की मजबूत होती पसंद का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि Pernod Ricard अपनी रणनीति को "डी-वेस्टर्नाइज" करके इस बदलाव के अनुरूप ढल रही है। इसमें अंतरराष्ट्रीय ब्रांडों के स्थानीय जुड़ाव को गहरा करना और स्थानीय कलाकारों के साथ सहयोग करना शामिल है।

यह बदलाव भारत के व्हिस्की बाजार में खास तौर पर दिखाई देता है। पिछले दशक में बाजार मास-ब्लेंडेड व्हिस्की से आगे बढ़कर स्थानीय स्तर पर बनी सिंगल माल्ट की ओर आया है। उपभोक्ता मांग में इस बदलाव और घरेलू ब्रांडों के आकर्षण को देखते हुए Pernod Ricard और उसकी प्रतिद्वंद्वी Diageo, दोनों ने भारतीय सिंगल माल्ट विकसित की हैं।

भारत ने Pernod Ricard के कारोबार के अन्य हिस्सों में कमजोर प्रदर्शन की भरपाई करने में भी मदद की है। Ricard ने कहा कि देश अमेरिका और चीन में कमजोरी के असर को कम कर रहा है। कंपनी ने हाल में पहली तिमाही की बिक्री में 0.9% की गिरावट दर्ज की। इन अन्य बाजारों में संकुचन के असर को सीमित करने में भारत का बड़ा योगदान रहा।

स्थानीय इकाई के वित्तीय नतीजे बताते हैं कि भारत इतना अहम क्यों है। Pernod Ricard India ने वित्त वर्ष 2026 में आबकारी शुल्क को छोड़कर ₹13,315 करोड़ का राजस्व दर्ज किया, जो 0.6% अधिक है। असाधारण मदों और कर से पहले लाभ 5.7% बढ़कर ₹2,483 करोड़ रहा। Imperial Blue ब्रांड को Tilaknagar Industries को बेचने से हुए ₹3,223

करोड़ के असाधारण लाभ की मदद से शुद्ध लाभ ₹1,755 करोड़ से बढ़कर ₹4,559 करोड़ हो गया।

भारत में कंपनी का पैमाना उसके निकटतम प्रतिस्पर्धी की तुलना में भी उल्लेखनीय है। Diageo के नियंत्रण वाली United Spirits ने ₹12,467 करोड़ की शुद्ध बिक्री दर्ज की, जो 7.7% अधिक है, जबकि EBITDA 11% बढ़कर ₹2,286 करोड़ रहा।

Ricard ने कहा कि अगर बोर्ड IPO का समर्थन करता है, तो इसकी वजह भारत का रणनीतिक महत्व होगा, न कि मूल कंपनी को नकदी की जरूरत। उन्होंने यह भी कहा कि जनवरी 2027 में भारत में बोर्ड की संभावित बैठक भू-राजनीतिक परिस्थितियों पर निर्भर करेगी।

Pernod Ricard के लिए अब सवाल यह नहीं है कि भारत एक बड़ा बाजार है या नहीं, बल्कि यह है कि कंपनी इस बाजार को अधिक स्वतंत्र और सार्वजनिक कॉरपोरेट पहचान देने के लिए कितनी दूर तक जा सकती है। व्यापक पेय कारोबार के लिए यह विचार-विमर्श रेखांकित करता है कि वैश्विक स्पिरिट्स समूहों के लिए भारत को सिर्फ एक और बड़े बाजार के रूप में देखना अब मुश्किल होता जा रहा है और भविष्य की वृद्धि के केंद्र के रूप में इसे नजरअंदाज करना भी।